National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multinationaljournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 13-04-2026, Accepted: 14-05-2026, Published: 29-05-2026
Volume 11, Issue 2, 2026, Page No. 75-77

सतत भविष्य निर्माण हेतु पुस्तकालयों का नवाचारी रूपांतरण : सतत विकास लक्ष्यों के संदर्भ में एक अध्ययन

सूर्यांशी[1], डॉ ज्योति गुप्ता[2]

[1] शोधार्थी, डॉ. एस. आर. रंगनाथन पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविध्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] सहायक आचार्य, डॉ. एस. आर. रंगनाथन पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविध्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

डिजिटल परिवर्तन के इस तीव्र दौर में पुस्तकालय पारंपरिक शांत पुस्तक–संग्रह केंद्रों से आगे बढ़कर सतत विकास के सशक्त ज्ञान एवं नवाचार केंद्रों के रूप में उभर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित 17 सतत विकास लक्ष्य (SDGs) वैश्विक स्तर पर गरीबी उन्मूलन, असमानताओं में कमी, पर्यावरण संरक्षण तथा वर्ष 2030 तक सभी के लिए बेहतर और सतत भविष्य सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शक हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित खोज प्रणालियाँ, हरित आधारभूत संरचना, सौर ऊर्जा सुविधाएँ, पुनः उपयोग योग्य संसाधनों का प्रयोग तथा नवाचार–प्रधान डिजिटल तकनीकों का समावेश पुस्तकालयों को अधिक स्मार्ट, सुलभ और पर्यावरण–अनुकूल बना रहा है। ये नवाचार न केवल ज्ञान एवं सूचना तक पहुँच को तेज, प्रभावी और व्यापक बनाते हैं, बल्कि संसाधनों के कुशल प्रबंधन, ऊर्जा संरक्षण तथा सतत विकास को भी प्रोत्साहित करते हैं, जिससे पुस्तकालय आधुनिक समाज में परिवर्तनकारी नवाचार केंद्र के रूप में स्थापित हो रहे हैं। यह शोधपत्र स्पष्ट करता है कि पुस्तकालयों को किस प्रकार रूपांतरित किया जा रहा है ताकि वे संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप एक सतत भविष्य के निर्माण में प्रभावी भूमिका निभा सकें। विशेष रूप से सतत विकास लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा), 9 (उद्योग, नवाचार एवं आधारभूत संरचना), 10 (असमानताओं में कमी), 11 (सतत शहर एवं समुदाय) तथा 16 (शांति, न्याय और सशक्त संस्थाएँ) पुस्तकालयों की भूमिका से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। साथ ही, यह शोधपत्र पुस्तकालयों के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों जैसे सीमित वित्तीय संसाधन, डिजिटल विभाजन, नीतिगत सहयोग का अभाव तथा नई तकनीकों के प्रभावी उपयोग हेतु कर्मचारियों के प्रशिक्षण की आवश्यकता पर भी विस्तृत प्रकाश डालता है, जो सतत भविष्य की दिशा में उनकी प्रगति को प्रभावित करती हैं।

मूल शब्दः सतत विकास लक्ष्य, सतत पुस्तकालय, पुस्तकालय मे नवाचार, संयुक्त राष्ट्र एजेंडा 2030

प्रस्तावना

प्राचीन अभिलेखागारों से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता संचालित ज्ञान केंद्रों तक, पुस्तकालयों ने समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर परिवर्तन किया। सतत विकास इक्कीसवीं सदी में वैश्विक प्रगति का एक निर्णायक ढांचा बन गया है। 2015 में, यूनाइटेड नेशंस ने गरीबी, असमानता, जलवायु में बदलाव और शांति से जुड़ी चिंताओं का हल ढूंढने के लिए सतत विकास लक्ष्य अपनाए। सभी लक्ष्यो में जानकारी और ज्ञान को ज़रूरी विषय के तौर पर प्रमुखता से दिखाया गया है।

सतत विकास लक्ष्य दिखाते हैं कि दुनिया की सरकारें 2030 तक दुनिया को बेहतर बनाने और सभी लक्ष्यो को लागू करने के लिए समर्पित हैं, ताकि चुनौतियों का सामना किया जा सके और इन लक्ष्यो को 2030 तक पूर्ण किया जाना, जिसमें 17 लक्ष्य और 169 मुख्य कार्य शामिल हैं। (bahra – Nayyar, 2025) पुस्तकालयों में नवाचार कई रूपों में हो सकता है। डिजिटल पुस्तकालय, कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित खोज प्रणालियाँ, ओपन एक्सेस रिपॉजिटरी, मोबाइल पुस्तकालय सेवाएँ, सामुदायिक शिक्षण कार्यक्रम, ये कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप कैसे ढल रहे हैं। ये नवाचार न केवल सूचना तक पहुँच को बेहतर बनाते हैं, बल्कि पुस्तकालयों को सामाजिक समावेशन, पर्यावरण जागरूकता और आर्थिक सशक्तिकरण में योगदान करने में भी मदद करते हैं। मुद्रित से डिजिटल संसाधन में बदलाव, क्लाउड आधारित प्रणाली का इस्तेमाल और आभसी सेवाएं का कार्यान्वयन पुस्तकालय को सतत मॉडल में बदल रहा है। पुस्तकालय मे ये नवाचार कागज का इस्तेमाल कम करते हैं, ऊर्जा की खपत भी कम करते हैं और संसाधन प्रबंधन को बढ़ावा देते हैं। (Mohanty, 2025)

सतत विकास लक्ष्य

सतत विकास लक्ष्यों को 25 सितंबर 2015 को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सतत विकास शिखर सम्मेलन के दौरान संयुक्त राष्ट्र के सभी 193 सदस्य देशों ने आधिकारिक रूप से अपनाया था। ये लक्ष्य सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा का हिस्सा हैं, जो एक वैश्विक योजना है जिसे साल 2030 तक सभी के लिए एक बेहतर और सतत भविष्य बनाने के लिए निर्मित किया गया है। इस ऐतिहासिक एजेंडा में 17 सतत विकास लक्ष्य जो देश ओर लोगों के सम्मान, शांति और खुशहाली के लिए तय किए गए हैं, जिन्हें साल 2030 तक पूरा किया जाना है। (Mahto – Kumar, 2024) ये 17 लक्ष्य हैं— (1) गरीबी उन्मूलन (2) भूखमरी समाप्त करना (3) अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण (4) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (5) लैंगिक समानता (6) स्वच्छ जल और स्वच्छता (7) सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा 8) सम्मानजनक कार्य और आर्थिक विकास (9) उद्योग, नवाचार और आधारभूत संरचना (10) असमानताओं में कमी (11) सतत शहर और समुदाय (12) उत्तरदायी उपभोग और उत्पादन (13) जलवायु कार्रवाई (14) पानी के नीचे जीवन (15) भूमि पर जीवन (16) शांति, न्याय और सशक्त संस्थान (17) लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वैश्विक साझेदारी।

सतत विकास लक्ष्य और पुस्तकालय

वैश्विक स्तर पर पुस्तकालयों को सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए पहचाना जा रहा है। ज्ञान के सेंटर के तौर पर वे लोगों को जानकारी पाने, शिक्षा को बेहतर बनाने, बराबरी को बढ़ावा देने और सतत विकास को सहयोग करने में मदद करते हैं। IFLA ने भी विकास की नीतियों में पुस्तकालयों की भूमिका को बढ़ावा दिया है और यह बताया है कि शिक्षा, लैंगिक समानता और सतत प्रगति के लिए

सूचना तक समान पहुँच बहुत जरूरी है। (Shesha – Singh, 2024)

लक्ष्य 4: (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) पुस्तकालय सबको साथ लेकर चलने वाली शिक्षा और ज़िंदगी भर सीखने के लिए मुफ़्त किताबें, डिजिटल रिसोर्स और सीखने की जगहें देती हैं। वे ज़रूरतमंद समुदायों के लिए साक्षरता कार्यक्रमों और कार्यशालाओं को समर्थन करती हैं ताकि सबको साक्षरता मिल सके।

लक्ष्य 9: (उद्योग, नवाचार और आधारभूत संरचना) यह लक्ष्य आधारभूत संरचना के निर्माण, सतत औद्योगिकीकरण और नवाचार को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। पुस्तकालय इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं वे इंटरनेट एक्सेस, ई–रिसोर्स और रिसर्च डेटाबेस जैसी डिजिटल संरचना प्रदान करके सीखने, शोध और तकनीकी विकास को सशक्त बनाते हैं।

लक्ष्य 10: (असमानताओं में कमी) पुस्तकालय इस लक्ष्य को पूरा करने में महिलाओं, ग्रामीण समुदायों और पिछड़े लोगों के लिए जानकारी, शिक्षा के साधन, इंटरनेट सेवाएँ और सबको साथ लेकर चलने वाले प्रोग्राम तक मुफ़्त पहुँच प्रदान करते है सभी को बराबर जानकारी मिलने और समुदाय में सीखने के मौकों के ज़रिए, पुस्तकालय सामाजिक, आर्थिक और डिजिटल कमियों को दूर करने में मदद करती हैं।

लक्ष्य 11: (सतत शहर और समुदाय) पुस्तकालय पांडुलिपियाँ, दुर्लभ किताबों और ऐतिहासिक दस्तावेज़ को सुरक्षित रखकर और उन्हें ऑनलाइन कैटलॉग और डिजिटल रिपॉजिटरी के ज़रिए आसानी से पहुँच योग्य बनाकर सांस्कृतिक विरासत को बचाने में अहम भूमिका निभाती हैं। पुस्तकालय प्रदर्शनी, व्याख्यान तथा ओपन रीडिंग स्पेस के जरिए जनसामान्य की पहुँच और सहभागिता को बढ़ावा देते हैं।

लक्ष्य 16: (शांति, न्याय और सशक्त संस्थान) सभी तरह की पुस्तकालय भरोसेमंद जानकारी देकर, ज्ञान तक मुफ़्त पहुँच की रक्षा करके और जानकारी पूर्ण चर्चा और नागरिक शिक्षा के लिए जगह देकर शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण समाज को मज़बूत करती हैं। पुस्तकालय कानूनी, प्रशासनिक और नीतिगत जानकारी प्रदान करके पारदर्शिता, जवाबदेही और सक्रिय नागरिकता को बढ़ावा देते हैं।

साथ ही लक्ष्य 13 (जलवायु कार्रवाई) को पुस्तकालय ग्रीन लाइब्रेरी प्रैक्टिस, पर्यावरण जागरूकता प्रोग्राम और जलवायु से जुड़ी जानकारी और लक्ष्य 17 (लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वैश्विक साझेदारी) में पुस्तकालय स्कूल, विश्वविद्यालय और सरकार के साथ मिलकर प्रोजेक्ट, शोध और ज्ञान साझा करना को अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करती हैं।

पुस्तकालयों में नवाचार

डिजिटल ज़माने में पुस्तकालय इंटेलिजेंट ज्ञान केंद्रों में परिवर्तित हो रहे हैं। जो नवाचार के ज़रिए सतत विकास को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करती हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी आधुनिक तकनीकों को एकीकृत करके, पुस्तकालय पारंपरिक सेवाओं को बुद्धिमान और उपयोगकर्ता केंद्रित सिस्टम में बदल रहे हैं, जो यूनाइटेड नेशंस के सतत विकास लक्ष्य के साथ अनुरूप वैश्विक सततता पहलों का समर्थन करती हैं। (Kumar, 2024) हरित पुस्तकालय इको–फ्रेंडली निर्माण, ऊर्जा की बचत और वेस्ट कम करके सतत विकास पर केंद्रित रहती हैं। भारत में चेन्नई की अन्ना सेंटेनरी पुस्तकालय इसका एक बड़ा उदाहरण है, जो एशिया की पहली गोल्ड–रेटेड पुस्तकालय है। ये संस्थान पर्यावरण पर होने वाले असर को कम करने के लिए प्राकृतिक प्रकाश, वर्षा जल संचयन और सौर ऊर्जा का उपयोग करते हैं। (Choudhury, 2019)

चुनौतियाँ

पुस्तकालय को नवाचार और सतत प्रथाओं को लागू करने में कई बड़ी रुकावटों का सामना करना पड़ रहा है। जैसे की सरकार पुस्तकालय की सस्टेनेबिलिटी को बढ़ावा देने की कोशिशों को समर्थन नहीं करती है, और उन्हें पर्याप्त वित्तीय सहायता नहीं मिलती है। अलग–अलग शैक्षणिक संस्थान में अच्छी पुस्तकालय भवन और पढ़ने के लिए पर्याप्त जगह, फर्नीचर, लाइटिंग जैसी सुविधाएं नहीं होतीं, जिससे विद्यार्थी को बराबर और अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा नहीं मिल पाती। कई पुस्तकालय में पुस्तकालय चलाने के लिए प्रशिक्षित पुस्तकालय स्टाफ की कमी होती है। पुस्तकालय कर्मियों के कौशल–विकास और प्रशिक्षण पर ध्यान नहीं दिया जाता है।, जिससे वे सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कार्य–पद्धतियाँ सीख सकें। साथ ही डिजिटल विभाजन, इंटरनेट, उपकरण और डिजिटल कौशल तक असमान पहुँच से उत्पन्न एक बड़ी बाधा बना हुआ है, और ऐसा कोई केंद्रीय कानून या नीति नहीं है जो पूरे देश में पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता के मानकीकरण को सुनिश्चित कर सके। (Agarwal – Jaiswal, 2022)

सुधार एवं सुझाव

- सतत विकास लक्ष्य पाने के लिए ज़रूरी मदद के लिए पुस्तकालय को अशासकीय संगठन और दूसरी सस्थाओ के साथ साझेदारी करनी चाहिए।
- पुस्तकालय को समय–समय पर वर्कशॉप, सेमिनार और संगोष्ठी आयोजित करना करने पर ध्यान देना चाहिए ताकि लोगों को सस्टेनेबिलिटी के बारे में जागरूक किया जा सके।
- पुस्तकालयों को चाहिए कि वे पर्याप्त वित्तीय संसाधन सुनिश्चित करें, संसाधनों का कुशल उपयोग करें ताकि सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप नवाचारी सेवाओं को बढ़ावा दिया जा सके।
- लक्ष्य को पाने में पूरी तरह से हिस्सा लेने के लिए पुस्तकालय कर्मियों का कौशल विकास के लिए नियमित प्रशिक्षण आवश्यक है।
- पुस्तकालय को अपने लक्ष्यों और प्रशासनिक नीतियाँ को सतत विकास के सिद्धांतों के साथ मिलाना चाहिए ताकि यूनाइटेड नेशंस द्वारा बढ़ावा दिए गए समावेशी शिक्षा, समानता और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

निष्कर्ष

सतत विकास की दिशा में पुस्तकालयों की भूमिका तभी सार्थक होगी जब वे नवीन तकनीकों को अपनाते हुए SDGs के उद्देश्यों के साथ अपनी सेवाओं और नीतियों को समन्वित करें। डिजिटल टूल्स, ग्रीन प्रैक्टिस और कम्युनिटी एंगेजमेंट को अपनाकर, पुस्तकालय सिर्फ़ किताबों के भंडार से आगे बढ़कर ज्ञान और तरक्की के जीवंत केंद्र बन सकते हैं। वे अच्छी शिक्षा, असमानता कम करने, शांति, न्याय और सशक्त संस्थाएँ, नवाचार और आधारभूत संरचना जैसे SDGs को पाने में अहम भूमिका निभाते हैं। तथा पुस्तकालयो को पर्यावरण–अनुकूल डिज़ाइन, ओपन–एक्सेस संसाधनों और आजीवन सीखने के कार्यक्रमों को प्राथमिकता देनी चाहिए। यह परिवर्तन न केवल उनके अस्तित्व को विकसित करेगा, बल्कि उन्हें समाज के विकास और ज्ञान के प्रसार में और अधिक प्रभावी व सशक्त बनाएगा। अंततः, नवाचारी पुस्तकालय सभी के लिए एक सतत और उज्ज्वल भविष्य की राह प्रशस्त करेंगी।

संदर्भ

1. Agarwal K, Jaiswal B. The Role of Libraries in Promoting Sustainable Development Goals (SDGs) in India. Information Services and Policies in the Perspective of ICT, 2022, 3–8.
2. Bahra GK, Nayyar S. Empowering Sustainable Development: The Transformative Role of Libraries in Achieving Sustainable Development Goals (SDGs). The Academic, 2025, 03(03). https://doi.org/10.5281/ZENODO.17400164
3. Begam A, Noman N, Noman M. Implementation of Sustainable Development Goals in Pakistan: A Comprehensive Analysis, Progress Review and Emerging Challenges Implementation of Sustainable Development Goals in Pakistan. International Journal of Management Research and Emerging Sciences,2025:15:73–98. https://doi.org/10.56536/ijmres.v15i3.802
4. Bhat S. The Roles of Library and Information Services in Achieving Sustainable Development Goals in India. Association of Indian Universities,2026:63:135–141.
5. Choudhury DS. Green Library Initiatives in India. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 2019, 6(1).
6. Devi S, Gupta D, Arahova A. IFLA's role in mobilizing libraries towards achieving the Sustainable Development Goals: A review. IFLA Journal, 2024, 50. https://doi.org/10.1177/03400352241252926
7. Jena BR. Advancing Sustainable Development through Public Libraries: An Indian Knowledge System Approach. International Journal of Social Science Research (IJSSR),2026:3(1):17–29. https://doi.org/10.70558/IJSSR.2026.v3.i1.30763
8. Kumar SR. Smart Libraries: Driving Innovation for a Sustainable Knowledge System in the Fifth Industrial Revolution. Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR), 2024, 19(12).
9. Mahto DNN, Kumar A. Sustainable Development Goals (SDGs) and Achievements of India. International Journal of Creative Research Thoughts, 2024, 12(4).
10. Mohanty R. From Print to Purpose: Digital Innovation in Academic Libraries for A Sustainable Future. RICERCA, International Journal of Multidisciplinary Research and Innovation, 2025, 5(8).
11. Panda S, Das SK. Role of public libraries in promoting social sustainability for the United Nations sustainable development goals (SDG): An exploratory study. Library Waves,2022:8(2):129–138.
12. Rizvi S, Kumar B, Kisan U. Role of Robotics & Automation in Achieving Sustainable Development Goals. International Journal of Scientific Research in Engineering and Management,2025:09:1–9. https://doi.org/10.55041/IJSREM55229
13. Shesha A, Singh R. The Role of Indian Academic Libraries in Advancing and Achieving Sustainable Development Goals. LIS TODAY,2024:10:29–35. https://doi.org/10.48165/lt.2024.10.5